



MAHILA MAHAVIDYALAYA AMRAVATI

Opp.SBI Main Branch, Jog Chowk, Amravati.

Telephone: 0721-2571115

E-mail: mahilamahavidyalaya.amt@gmail.com website: www.mmv.ac.in

AQAR ACADEMIC SESSION 2023-2024

Criterion III

3.3.3: Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five years

Related Documents

Submitted to



THE NATIONAL ASSESSMENT AND
ACCREDITATION COUNCIL

प्रेम पगी मन्दाकिनी

मीरा

संपादक

डॉ. मधु रानी शुक्ला

सह-संपादक

शाम्भवी शुक्ला



प्रेम पगी मन्दाकिनी मीरा

सम्पादक

डॉ. मधु रानी शुक्ला

सह-सम्पादक

शाम्भवी शुक्ला

ओमेगा पब्लिकेशन्स

नई दिल्ली-110002

13. भक्तिरस की पराकाष्ठा : मीरा व्यक्तित्व एवं कृतित्व 94
डॉ. निर्झरी देसाई ठक्कर
14. संत मीराबाई : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 100
डॉ. पल्लवी लोहानी
15. मीराबाई का संगीत-जगत में योगदान 103
डॉ. मंजू श्रीवास्तव
16. संत मीराबाई : परिचय एवं परिशीलन 107
डॉ. प्रियंका अरोड़ा / सिद्धार्थ चटर्जी
17. A STUDY IN CONTEXT OF LITERATURE AND NATURE 113
Ms. Aditi Singla / Mr. Vinay Sharma
18. The Foundations of the Bhakti Tradition and Mirabai's Literary Contribution to the Movement 123
Ananya Shirali Sujaya Vijayakumar
19. Meera and her Way of Life: Social Perspective 128
Arani Bhakta
20. साहित्य में मीरा 134
आशीष कुमार मिश्रा
21. "CHINA KI MEERA : LIU RUSHI AND He-Yin Zhen", A GLOBAL PERSPECTIVE 136
Ashutosh Kumari
22. ओशो की मीरा 144
बलबीर प्रसाद
23. साहित्य में मीरा 150
छाया
24. संत मीराबाई का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 156
डॉ० सुनील कुमार तिवारी / दीक्षा चौधरी
25. संत मीराबाई : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 160
ज्योति कुमारी / डॉ. अंजू कुमारी
26. सामाजिक सन्दर्भ में मीराबाई 165
मुमताज़ परवीन
27. मीरा बाई द्वारा रचित पदों का विश्लेषण एवं रचनात्मक अध्ययन 170
प्रज्योत देवासकर / प्रो. डॉ. स्नेहाशीष दास

मीरा बाई द्वारा रचित पदों का विश्लेषण एवं रचनात्मक अध्ययन

प्रज्योत देवासकर

शोधार्थी -

महिला महाविद्यालय, अमरावती

प्रो. डॉ. स्नेहाशीष दास

शोध निदेशक -

संगीत विभाग प्रमुख,

महिला महाविद्यालय, अमरावती

सारांश - मीराबाई हिन्दू आध्यात्मिक कवयित्री थीं, जिन्होंने श्रीकृष्ण को अपना सर्वस्व मानकर उनके प्रति अपने श्रद्धा और प्रेम को पदों और भजनो के माध्यम से व्यक्त कर के साहित्य, संगीत और कला को धन्य कर दिया। जिनके भगवान श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित भजन उत्तर भारत में बहुत लोकप्रिय हैं। भजन और स्तुति की रचनाएँ कर जनमानस को आध्यात्म एवं भगवान के और समीप पहुँचाने वाले संतों और महात्माओं में मीराबाई का स्थान सबसे ऊपर माना जाता है। प्रस्तुत लेख में संत मीरा बाई के पदों के विश्लेषणात्मक अध्ययन कर के उनकी कृतियों को विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत करने का प्रयास किया गया है।

परिचय-

पायो जी मैंने नाम रतन धन पायो।

बस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।

जनम जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो।

खरचौ नहिं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो।

सत की नाव खेवहिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस पायो।।

इन पंक्तियों को पढ़कर आप समझ गए होंगे की यह भक्तिकाल की महान

विदुषी 'मीराबाई' के भाव भक्ति पूर्ण उद्धार हैं।

मीराबाई का सम्बन्ध एक राजपूत परिवार से था। वे राजपूत राजकुमारी थीं, जो मेड़ता महाराज के छोटे भाई रतन सिंह की एकमात्र संतान थीं। उनकी शाही शिक्षा में संगीत और धर्म के साथ-साथ राजनीति व प्रशासन भी शामिल थे। एक साधु द्वारा बचपन में उन्हें कृष्ण की मूर्ति दिए जाने के साथ ही उनकी आजन्म कृष्ण भक्ति की शुरुआत हुई, जिनकी वह आराधना करती थीं।

मीरा बाई के संघर्षपूर्ण जीवन में उन्होंने सदैव हरी नाम का सहारा लिया और अपने प्रभु को याद करते करते अनेकों पदों की रचनाये की। मीराबाई के काव्य में कई भाषाओं का समावेश दिखाई देता है। मीरा बाई की जन्मभूमि राजस्थान में होने के कारण उनके पदों में राजस्थानी भाषा का प्रमुख प्रभाव देखे देता है। कुछ पद ब्रज भाषा, पश्चिमी हिंदी तथा कुछ पद पंजाबी में भी प्राप्त होते हैं। ऐसा कहा जाता है की जीवन के अंतिम कुछ वर्ष मीराबाई ने द्वारका, गुजरात में गुजारे अतः उनके कुछ पद गुजराती भाषा में भी पाए जाते हैं।

उद्देश्य- मीरा बाई द्वारा रचित असंख्य पदों का अध्ययन कर के उनमें वर्णित भावों के अनुसार उनका वर्गीकरण करना इस लेख का मूल उद्देश्य है।

वर्तमान अध्ययन का क्षेत्र- कई विद्वानों और शोधार्थियों के सामने मीरा बाई के पदों के बारे में जानकारी लेना अत्यंत ही दुर्गम कार्य रहा है क्योंकि मीरा बाई के पद लिखे नहीं बल्कि गाये गए थे। मीरा बाई लेखक या कलाकार नहीं थी, वो तो मात्र एक भक्त थी जिसने भक्ति भावना के आवेश में अपने गिरधर नागर की मूर्ति के सामने अथवा मार्ग में चलते हुए या साधु संतों की संगती में अपने पदों का गान किया और वे गीत मौखिक परंपरा से बहुत दिनों तक जनता में प्रसिद्ध रहे। अन्य संतों जैसे सूरदास, कबीर, रैदास आदि संतों ने भी अपने पद गाये थे, लिखे नहीं थे परन्तु उन महात्माओं के शिष्य और संप्रदाय के लोगों ने उनके जीवन काल अथवा मृत्यु के उपरांत उन रचनाओं को लिपि बद्ध कर लिया जिससे उन रचनाओं की प्रामाणिकता जांची जा सकती है। परन्तु मीरा बाई का किसी विशेष संप्रदाय से सम्बन्ध नहीं रहा और न ही उनका कोई शिष्य वर्ग रहा, इसी प्रकार कोई संतान या कुटुम्बी भी नहीं रहे जो उनकी रचनाओं को लिपिबद्ध करवाते अतः केवल मौखिक परंपरा से ही उनके पदों का प्रचलन होता रहा। अतः इस अध्ययन में भी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी जैसे की शोध पत्र, पुस्तकों एवं इंटरनेट पर उपलब्ध जानकारी जैसे की वीडियो, फिल्में तथा संगीत का सहारा लिया गया है।

क्रियाविधि- सर्वप्रथम मीरा बाई द्वारा रचित पदों का अध्ययन एवं वर्गीकरण करने के लिए पदों को एकत्रित करने का कार्य सबसे दुष्कर रहा। इन पदों को

एकत्रित करने हेतु, इंटरनेट पर उपलब्ध जानकारी जैसे वीडियो, गीत, संगीत आदि के साथ साथ पुस्तकों एवं अन्य लेखों का भी सहारा लेना पड़ा। उसके पश्चात् मीरा बाई की संक्षिप्त जीवनी के बारे में पुस्तकों और लोकोक्तियों द्वारा जानकारी हासिल की गयी। और अंत में, क्योंकि ये पद अलग अलग भाषाओं में लिखे गए हैं, उनका भावार्थ समझने के लिए कुछ मित्रों तथा भाषाविदों से मदद ली गयी। तत्पश्चात्, सभी पदों को समझ कर उन्हें अलग अलग वर्गीकृत करने का कार्य सम्पन्न किया गया

मीरा बाई द्वारा रचित पदों का विश्लेषण एवं रचनात्मक अध्ययन

मीराबाई जिन पदों को गाती थी तथा भाव विभोर हो कर नृत्य करती थी वे ही पद उनकी रचनाएँ कहलाये। मीरा बाई द्वारा रचित अनेको पदों तथा रचनाओं में 'नरसी जी का मायरा', 'राग गोविन्द के पद', 'राग सोरठ के पद', 'गीत गोविन्द की टीका' आदि प्रमुख हैं

मीरा बाई के काव्य में उनके हृदय की सरलता और निश्छलता स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। उन्होंने कृष्ण भक्ति की परंपरागत पद शैली को अपनाया। उनके सभी पद संगीत स्वरों में बँधे हुए हैं। उनके गीतों में उनकी आवेशपूर्ण अभिव्यक्ति देखने को मिलती हैं। अपने प्रिय प्रभु के समक्ष आत्मसमर्पण की भावना तथा तन्मयता ने उनके काव्य को मार्मिक एवं प्रभावशाली बना दिया है

उनकी काव्य भाषा अत्यंत मधुर, सरस एवं प्रभावपूर्ण हैं। अपने ज्ञान एवं पांडित्य का प्रदर्शन कभी मीरा बाई के काव्य का उद्देश्य नहीं रहा बल्कि सम्पूर्ण भक्ति से ओतप्रोत रोज़मर्रा की भाषा के प्रयोग ने उनके गीतों को जन मानस के बीच लोकप्रिय कर दिया।

मीरा बाई रचित पदों को मुख्यतः निम्न लिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

विरह सूचक

मीरा बाई के इन पदों में मुख्यतः वियोग एवं विरह से संबंधित रचनायें पायी जाती हैं। वियोग की अभिव्यक्ति से सम्बंधित कुछ प्रमुख पद निम्नानुसार हैं

1. छोड़ मत जाज्यो जी महाराज
2. सांवरिया म्हारे नैना आगे रहियो जी
3. आओ मनमोहन जी जोऊ तोरी बाट
4. कान्हा रे तोरी जोवत रह गयी बाट

संघर्ष सूचक

जैसा की सर्व विदित है, मीरा बाई का सम्पूर्ण जीवन ही संघर्ष पूर्ण रहा है। उनकी श्रीकृष्ण भक्ति एवं प्रेम के कारण उन्हे जीवन में कई संघर्षों का सामना करना पड़ा। लोकोक्तियों की माने तो उन्हें राणा जी ने विष का प्याला भेजा, सांप का पिटारा भेजा और इसी तरह की कई यातनाओं से प्रताड़ित किया गया। श्रीकृष्ण की कृपा से इन यातनाओं से मीरा बाई का कोई अहित तो नहीं हुआ उलटे प्रभु में उनकी श्रद्धा और बढ़ गयी। ८ राणा जी भेजा विष रा प्याला, सोइ अमृत कर दीजो, इस तरह के पदों से मीरा बाई के संघर्ष की अभिव्यक्ति और श्रीकृष्ण द्वारा उस संकट के निराकरण की जानकारी सहज ही पाई जा सकती है। मीरा के संघर्ष सूचक पदों में कुछ पद निम्नानुसार हैं—

मीरा मगन भई हरी के गुण गाय,
सांप पिटारा राणा भेज्या, मीरा हाथ दियो जाय
राणा जी भेजा विष रा प्याला

समर्पण सूचक गीत

मीरा बाई के काफी सारे पदों में सम्पूर्ण समर्पण का भाव स्पष्ट होता है। गिरिधर गोपाल को अपना सर्वस्व न्योछावर करने और उसके प्रेम में उन्मत्त होकर आचरण / विचरण करने का भाव सहज ही सामने आता है। कहा जाता है की विहाहोपरांत अपने ससुराल में हो रही प्रताड़ना के कारण मीरा बाई द्वारका में जा कर रहने लगी और अधिकतर समय संतों के साथ व्यतीत करने लगी। उनके समर्पण भाव को देख कर अनेक संतों में उनके प्रति आदर का भाव जागृत होता था। उनके सम्पूर्ण समर्पण भाव को जताते हुए कुछ पद इस प्रकार हैं—

पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे
हरी मेरे जीवन प्राण आधार
जो तुम तोड़ो पिया मैं नहीं तोड़ू रे
म्हारा रे गिरधर गोपाल दूसरा न कोय
मेरो मन राम ही राम रटे रे
अब कोई कछु कहे दिल लागा रे

निर्गुणी भजन

अनेक लोकोक्तियों के अनुसार मीरा बाई ने संत रविदास को अपना गुरु बना लिया था और उनसे काफी प्रभावित रही। उनके समय के अनेकों संतों और गुरुओं

का भी शायद उनपर प्रभाव पड़ा हो और उन्होंने कुछ इस प्रकार की रचनाये भी लिखी जिनसे जन मानस को जीवन जीने की कला और अनेक दार्शनिक सूत्रों की भी जानकारी मिलती है। इस क्षेत्र में की गयी मीरा बाई की कुछ रचनाये हैं—

जग में जीवन थोड़ा रे, राम कुण करे जजार
संतों करम की गति न्यारी
कछु लेना न देना मगन रहना

मिलन एवं बधाई गीत

मीरा बाई के कुछ भजन एवं पद प्रभू से मिलन एवं बधाई गीतों की श्रेणी में भी रखे जा सकते हैं। इन गीतों में मीरा बाई ने शृंगार रस की प्रधानता लिए हुए शब्दों का प्रयोग करते हुए पदों को सुन्दर शृंगारिक रूप प्रदान किया है। इस कड़ी में कुछ प्रचलित पद इस प्रकार हैं—

रंग भरी, रंग भरी, रंग सु भरी री
बसों मोरे नैनन में नन्दलाल
पायोजी मैंने राम रतन धन पायो

पौराणिक सन्दर्भ

राधा, गोपिका, बांसुरी, यशोदा आदि विषयों पर भी मीरा बाई ने कई प्रचलित गीतों की रचना की। इन सभी भजनो में कृष्ण की अनेकों लीलाओं, रास, गोपिकाओं, राधा रानी और मैया यशोदा के साथ उनके प्रसंगों का भी अतिशय सुन्दर वर्णन किया गया है। जिस प्रकार अब राधे रानी दे डारो बंसी मोरी गीत राधा द्वारा कान्हा की बांसुरी छुपाये जाने का अति सुन्दर वर्णन है। इसी प्रकार की कुछ और मीरा बाई की रचनाएँ हैं—

अब राधे रानी दे डारो बंसी मोरी
राधा प्यारी दे डारो बंसी
म्हारो प्रणाम बांके बिहारी को
तुम बिन मोरी कौन खबर ले

निष्कर्ष

मीरा बाई की महानता एवं लोकप्रियता उनके पदों और रचनाओं की वजह से भी है। हृदय की गहरी पीड़ा, विरहानुभूति और प्रेम की तन्मयता से भरे हुए मीरा बाई के पद अनमोल हैं। मीरा बाई ने अपने पदों में शृंगार रस और शांत रस का प्रयोग

विशेष रूप से किया है। मीरा बाई ने भक्ति को एक नया आयाम दिया है और एक ऐसे स्थान पे पहुंचाया है जहाँ भगवान ही इंसान का सबकुछ होता है। संसार के कोई भी लोभ और मोह उसे विचलित नहीं कर सकते। राज परिवार में जन्म एवं विवाह होने के बाद भी मीरा बाई वैरागी बनी रही जो की उनकी कृष्ण भक्ति की अनूठी मिसाल है।

अतः इस प्रकार वाणी का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि मीराबाई ने अपनी वाणी में छन्द, अलंकार, रस और संगीत का पूर्णतया प्रयोग किया और इसे आध्यात्म का मार्ग बनाया, जो कि वर्तमान के लिए प्रेरणा है। मीराबाई ने 'भारतीय शास्त्रीय संगीत' को संजोए रखने में एक अनोखी कड़ी जोड़ दी, जिसका प्रमाण तथा पुष्टि विभिन्न ग्रन्थों के अवलोकन करने पर स्पष्ट होती है। अतः इस पद्धति को मीराबाई ने अपनाया और अपनी वाणी को संगीत के साथ जोड़कर आध्यात्म के साथ-साथ संगीत का भी प्रचार-प्रसार किया, साथ ही संगीत को जीवित रखने में भी अपनी सहमति तथा हिस्सेदारी पाई।

'सा कला या विमुक्तये' अर्थात कला वह है जो मुक्ति की ओर ले जाये और मीरा बाई ने अपनी भक्ति को संगीत के रंग से उभार कर वास्तव में इस कथन को चरितार्थ करते हुए मुक्ति पायी।

ग्रन्थ सूची

- * Chandrani] Pinki Purkayastha & Meera bhajan <https://fdocuments-in/document/meera-bhajan-html\page2>
- * Meera Bhajans by Lata Mangeshkar – Youtube (<https://www.youtube-com/watch?v,Tmxb51FFvRQ>)
- * Meera Bhajans by Anuradha Paudwal – Youtube <https://www.youtube-com/watch?v%34L8wTb3Q2wSk>
- * पद्मावती 'शबनम', 'मीरा बृहत पद संग्रह', - लोक सेवक प्रकाशन, बनारस
- * मीरा के पद/ दोहे हिंदी अर्थ सहित जयंती एवम जीवन परिचय <https://www.deepawali-co-in/meera-bai-ke-pad-dohe-meaning-in-hindi-html>

INDIAN DEMOCRACY & WOMEN'S POLITICAL PARTICIPATION



EDITOR

DR. AVINASH B. MOHARIL

DR. PRAVIN J. GULHANE

INDIAN DEMOCRACY

& WOMEN'S POLITICAL PARTICIPATION

■ Dr. Avinash B. Moharil

Dr. Pravin J. Gulhane

■ *First published*, – 17th October, 2023

© Editor & Publisher

■ **Published by**

Prof. Virag Gawande for

Aadhar Publications,

Behind Govt. VISH,

New Hanuman Nagar,

Amravati – 444 604.

■ **Printed by**

Aadhar Publications,

■ Notice

The editor, publisher, owner, printer will not be responsible for the articles published in this issue. The articles published in this issue are the personal views of the authors.

■ Price : 400/-

■ ISBN- 978-93-95494-85-4

भारतीय लोकशाहीमध्ये महिलांचा राजकीय सहभाग - एक दृष्टीक्षेप

प्रा. डॉ. प्रविण जयकृष्ण गुल्हाने

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख, महिला महाविद्यालय, अमरावती.

सारांश :-

भारताने लोकशाही शासन पद्धतीचा स्वीकार केला असल्यामुळे निश्चितच भारताच्या लोकशाहीमध्ये महिलांची भागीदारी ही पुरुषांच्या निम्मे असायला पाहिजे. परंतु भारताचे संविधान लागू होऊन 73 वर्षांचा कालावधी लोटला तरी आजही महिलांचा भारताच्या लोकशाहीमध्ये सहभाग पुरुषांच्या बरोबरीने वाढलेला दिसून येत नाही. त्यामुळे जगात सर्वात मोठी लोकशाही असलेला देश म्हणून ही जी भारताची ओळख आहे त्याबद्दल नुसता अभिमान बाळगुण चालणार नाही. कारण लोकशाही हा केवळ शासन वस्थेचा प्रकार नसून ती एक जीवनप्रणाली आहे. महात्मा गांधीजींनी लोकशाही बद्दल आपले विचार मांडताना म्हटले आहे की, "सभ्य, सुसंस्कृत जीवन जगण्याचा मार्ग म्हणजे लोकशाही होय. लोकशाही जर जीवनप्रणाली असेल व सभ्य व सुसंस्कृत जीवन जगण्याचा मार्ग असेल तर हा मार्ग मानव म्हणून स्त्री आणि पुरुष दोघांनाही समान आहे. दोघांचाही या मार्गावर समान प्रवास असल्याशिवाय प्रगल्भ लोकशाहीची कल्पना करणे कठिण आहे.

प्रस्तावना :-

भारताची लोकशाही शासन व्यवस्था ही भारताच्या संविधानानुसार चालते त्यामुळे भारताच्या संविधानामध्ये लोकशाही शासनव्यवस्थेच्या आधारभूत घटकांबद्दल असलेल्या तरतुदी लक्षात घेणे आवश्यक ठरते. या तरतुदी म्हणजे संविधानाच्या तिसऱ्या भागातील कलम 12 ते 35 अंतर्गत दिलेले मुलभूत अधिकार महिला असो अथवा पुरुष सर्वांना समान आहे. समतेच्या मुलभूत अधिकारातील कलम 14 नुसार कायद्यापुढे सर्व समान आहे. सर्वांना कायद्याचे

समान संरक्षण आहे संविधानाच्या चौथ्या भागामध्ये कलम 39(क) नुसार उपजीविकेचे पर्याप्त साधन मिळविण्याचा अधिकार स्त्री व पुरुष नागरिकांना सारखाच असावा.¹ असे म्हटले आहे. एवढेच नाही तर कलम 39(घ) नुसार पुरुष व स्त्रीया दोघांनाही समान कामाबद्दल समान वेतन मिळावे² अशी तरतुद आहे. यासोबतच स्त्री आणि पुरुष दोघांच्याही आरोग्याची दक्षता घेऊन कलम 39(ड) अंतर्गत ही तरतुद करण्यात आली आहे की, "स्त्री व पुरुष कामगारांचे आरोग्य व ताकद आणि बालकाचे कोवळे वय यांचा दुरुपयोग करून घेऊ नये आणि नागरिकांना आरंभिक गरजेपोटी त्यांचे वय किंवा ताकद यास न पेलणाऱ्या व्यवसायात शिरणे भाग पाडू नये.³ भारतीय संविधानाच्या चौथ्या भागामध्ये नागरिकांकरिता मूलभूत कर्तव्ये सांगितली आहे. कलम 51क(4) अंतर्गत धार्मिक, भाषिक व प्रादेशिक किंवा वर्गीय भेदांच्या पलिकडे जाऊन अखिल भारतीय जनतेमध्ये एकोपा व भ्रातृभाव वाढीला लावणे, स्त्रियांच्या प्रतिष्ठेला उणेपणा आणणाऱ्या प्रथांचा त्याग करणे.⁴ हे सर्व भारतीय नागरिकांचे कर्तव्ये आहे.

भारताने प्रातिनिधिक लोकशाहीचा स्वीकार केलेला आहे. या प्रतिनिधींमध्ये पुरुष आणि महिला दोघांचाही समावेश आहे. त्यामुळे 18 वर्षे पूर्ण झालेल्या पुरुष अथवा महिला दोघांनाही मतदानाचा अधिकार प्राप्त झालेला आहे. संविधानातील कलम 325 नुसार "कोणत्याही व्यक्तीला धर्म, वंश, जात किंवा लिंग इत्यादी कारणावरून मतदार यादीमध्ये आपले नाव समाविष्ट करण्यापासून रोखता येणार नाही तसेच कलम 326 नुसार लोकसभेच्या व प्रत्येक राज्याच्या विधानसभेच्या निवडणुका प्रौढ मताधिकाराच्या तत्त्वावर होतील.⁵ याचा अर्थ असा की वयाची 18 वर्षे पूर्ण झालेले महिला व पुरुष लोकसभा, घटकराज्यातील विधानसभेच्या प्रतिनिधींना प्रत्यक्ष निवडून देतील. या सोबतच निवडणुकीमध्ये उभे राहण्याचा अधिकार, सरकारच्या कामकाजाचे टिकात्मक परीक्षण करण्याचा अधिकार, पुरुष आणि महिला दोघांनाही समान आहे संविधानातील कलम 243 हे पंचायत राज व्यवस्थेशी संबंधित आहे या

पंचायत राज व्यवस्थेमध्ये सुरुवातीला 33 टक्के आरक्षण महिलांना होते. आज 50 टक्के आरक्षण प्राप्त झालेले आहे. तसेच केंद्रातील लोकसभा व घटकराज्यातील विधानसभामध्ये महिलांना 33 टक्के आरक्षणाच्या दिशेने वाटचाल सुरु आहे.

भारतीय नागरिकांचे जीवनमान, संरक्षण व विकास या अनुषंगाने वरील सर्व उल्लेखीय संविधानिक तरतुदींचा आशय लक्षात घेता पुरुष असो वा महिला दोघांनाही आपले जीवनमान उंचावण्याचा, संरक्षणाचा आणि विकास घडवून आणण्याचा समान अधिकार प्राप्त झालेला आहे. आवश्यकता आहे ती म्हणजे पुरुष आणि महिला दोघांनाही आपली मानसिकता बदलण्याची. पितृसत्ताक पद्धती प्रमाणे पुरुषानेही स्वतःचे वर्चस्वाची निरंतर अपेक्षा करणे आणि महिलांनीसुद्धा आपल्या नेतृत्व विकासाच्या प्रक्रियेत स्वतःला मागे ठेवून चालणार नाही. केवळ प्रतिनिधिक स्तरावर महिलांचा सहभाग लोकशाहीत अपेक्षित नाही. पहिल्या लोकसभा निवडणुकीत (1951-52) मध्ये महिलांचे प्रमाण 4 टक्के वरून सतरावी लोकसभा निवडणूक (2019) मध्ये महिलांचे प्रमाण 14 टक्के पर्यंत वाढलेले आहे. पुरुषांच्या 85 टक्केवारीच्या तुलनेत आजही हे प्रमाण अत्यल्प आहे.

संशोधनाची उद्दिष्ट्ये :-

- 1) भारतीय लोकशाही आणि महिलांचा राजकीय सहभाग यातील परस्पर संबंधाचा अभ्यास करणे.
- 2) भारतात महिलांच्या राजकीय सहभागाकरिता संवैधानिक आधाराचा शोध घेणे.
- 3) भारतीय लोकशाहीमध्ये महिलांच्या राजकीय सहभागाशी संबंधित विविध घटकांचा शोध घेणे.
- 4) भारतीय लोकशाहीमध्ये महिलांचा राजकीय सहभाग कसा वाढेल याकरिता उपाययोजनांचा शोध घेणे.

संशोधनाची गृहितके :-

- 1) भारतीय संविधानात महिलांना पुरुषांइतके अधिकार आहे.
- 2) भारतीय महिलांच्या राजकीय सहभागाला संविधानिक आधार आहे.
- 3) भारतीय लोकशाहीमध्ये पुरुषांच्या टक्केवारीच्या तुलनेत महिलांचा राजकीय सहभाग अत्यल्प आहे.

संशोधन पद्धती :-

प्रस्तुत लघुशोध निबंधाकरिता विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक, संशोधन पद्धतीचा अवलंब केले आहे. यासोबतच तथ्य संकलनाकरिता वर्तमानपत्रे, मासिके, विविध संशोधनपर लेख आणि संदर्भग्रंथ इत्यादी दुय्यम स्रोतांचा वापर करण्यात आला आहे.

बिजसंज्ञा :-

भारतीय लोकशाही, भारतीय संविधान, राजकारण, महिलांचा राजकीय सहभाग, पंचायत राज व्यवस्था, महिला सक्षमीकरण इत्यादी.

भारतीय लोकशाही आणि महिलांचा राजकीय सहभाग :-

भारताच्या लोकशाहीची वाटचाल सर्वसमावेश लोकशाहीच्या दिशेने सुरु असली तरीही जोपर्यंत महिलांचा राजकीय सहभाग लोकशाहीमध्ये वाढणार नाही तोपर्यंत सर्वसमावेशक लोकशाहीचे ध्येय साध्य होणार नाही. हे ध्येय साध्य करण्याकरिता भारताने लोकशाहीचा मार्ग स्विकारलेला आहे. यालाच 'Grassroots Democracy' असे म्हणतात. तिचा संबंध स्थानिक स्वराज्य संस्थेशी आहे. स्वतंत्र भारताचे पहिले पंतप्रधान पंडित जवाहरलाल नेहरू यांनी स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे वर्णन करताना म्हटले होते की, 'स्थानिक स्वराज्य संस्था' या लोकशाहीच्या पाठशाळा आहे. आज या पाठशाळेला म्हणजे पंचायत राज व्यवस्थेमध्ये महिलांना 50 टक्के आरक्षण प्राप्त झालेले आहे. ग्रामपंचायत, पंचायत समिती, जिल्हा परिषद, नगरपालिका, महानगरपालिका इत्यादी ठिकाणी महिलांचा सहभाग वाढतो आहे. परंतु महिलांची केवळ संख्या

वाढून चालणार नाही तर महिलांचा निर्णय निर्धारण प्रक्रियेमध्ये सहभागही वाढला पाहिजे. ज्या पदावर महिला कार्यरत आहे त्या पदाचे निर्णय घेण्याचा अधिकार तिलाच असला पाहिजे. दुसऱ्या शब्दात असे म्हणता येईल की ते निर्णय घेण्याची क्षमता महिलेने स्वतःमध्ये विकसित केली पाहिजे तेव्हाच खऱ्या अर्थाने लोकशाही हे महिलांच्या राजकीय सहभागात अधिक वाढ होईल.

भारतीय लोकशाहीमध्ये महिलांचा राजकीय सहभाग पुरुषांच्या बरोबरीने समान नसला तरी महिलांचे राजकीय सहभागातील प्रमाण हळूहळू वाढत आहे. महिला शिक्षण, व्यवस्थापन, वैद्यकीय व्यवसाय, वाहतूक, लष्कर, अंतराळ अशा सर्वच क्षेत्रात काम करीत आहे. असे एकही क्षेत्र नाही जिथे महिलांना आपला शिरकाव केलेला नाही. तर कृषी, बचत गट, कुक्कुटपालन, दुग्ध व्यवसाय, शेळी पालन अशा क्षेत्रातही त्या मोठ्या आत्मविश्वासाने काम करीत आहे व आपल्या कुटुंबाला हातभार लावीत आहे. याला राजकारण हे क्षेत्रही अपवाद नाही. आज समाजाला या गोष्टीची जाणीव होते आहे की एक स्त्री जेव्हा स्वतःला सिद्ध करण्यासाठी घराचा उंबरठा ओलांडते तेव्हा ती काय परिवर्तन घडवू शकते याचे असंख्य उदाहरण देता येईल. केंद्रिय स्तरावर याचे उदाहरण म्हणून देशाच्या पहिल्या पंतप्रधान श्रीमती इंदिरा गांधी ज्यांच्या कारकिर्दीमध्ये पाकिस्तानातून बांगलादेशाची निर्मिती झाली आणि आंतरराष्ट्रीय स्तरावर एक सक्षम महिला पंतप्रधान म्हणून ज्यांनी आपली प्रखर भूमिका पार पाडली. 2022 मध्ये झालेल्या घटकराज्याच्या निवडणुकीमध्ये 8 मधून 7 राज्यात महिलांच्या मतदानाची टक्केवारी वाढलेली आहे ही बाबा चांगली आहे. परंतु राजकीय प्रक्रियेमध्ये महिलांच्या प्रतिनिधीत्वात अजूनही वाढ झालेली नाही. याकरिता धोरण निर्मात्यांनी, नागरिकांनी समाज संघटनांनी आणि सामान्य जनतेनी सोबत कार्य केले पाहिजे. 6 ज्यामुळे महिलांच्या लोकशाहीमध्ये राजकीय सहभागात वाढ होईल.

महिलांना सुधारणा हव्या आहेत त्याकरिता त्यांनी समोर आले पाहिजे. नेतृत्वगुण स्वतःमध्ये विकसित केले पाहिजे. निर्णय निर्धारण प्रक्रियेत सहभाग घेतला पाहिजे, नव्हे तशी अटच पुढे ठेवली पाहिजे की, मी निवडणुकीला उभे राहते परंतु निवडून आल्यानंतर माझे निर्णय मी स्वतः घेईल. मी पदावरची बाह्यी म्हणून काम स्विकारणार नाही. महिलांनी जर पुढे आलं तर त्यातून महिलांचेच मूलभूत प्रश्न सुटेल. महिलांची उन्नती घडेल आणि महिलांना राजकारणात येण्याच्या प्रेरणा मिळेल. याचे उत्तम उदाहरण म्हणजे 7 मार्च 2023 च्या दैनिक लोकमतमध्ये नाशिक जिल्ह्यातील देवळीच्या आमदार सरोज अहिरे यांनी मी आई आहे आणि आमदारही या शीर्षकांतर्गत आपला अनुभव सांगितला. त्या म्हणाल्या, 'हिरकणी कक्ष' ही काम करणाऱ्या कुठल्याही महिलेची मातेची गरज आहे, हे आपण मान्य करणार का? हाच माझा पहिला प्रश्न आहे. मी आमदार आहे, माझं पाच महिन्यांच बाळ, ते तापानं फणफणलेलं होतं. त्याला घेऊन मी विधिमंडळात पोहोचले तर हिरकणी कक्षात साध्या सुविधा नाहीत, सगळीकडे धुळ, तिथे बाळ कसं ठेवणार, एवढाच माझा प्रश्न होता, मी माझं बाळ सांभाळून आमदार म्हणून माझं काम करत होते. पण आजारी पाच महिन्यांचं बाळ ठेवणार कुठे या काळजीनेच त्यावेळी माझ्या डोळ्यात अश्रू आले. कितीतरी महिलांनी त्यावेळी मला मेसेज करून कळवलं की बरे झाले तुम्ही बोललात. आमच्या समोरही असाच प्रश्न असतो. पुढे त्या म्हणाल्या या संदर्भात लक्ष घालण्याची विनंती मी मुख्यमंत्र्यांनाही केली आहे. एवढाच नाही तर याविषयात मी जाहिरपणे बोलल्यानंतर काही खात्यात आधीपासून सुरू असलेल्या हिरकणी कक्षात दुरुस्ती ही झाली असे मला समजले. 7 महिलांचे प्रश्न महिलाच चांगल्या प्रकारे सोडवू शकतात. भारताच्या लोकशाहीमध्ये महिलांचा 50 टक्के वाटा असल्यामुळे महिलांच्या प्रश्नांची सोडवणूक करण्याकरिता महिलांचा राजकीय सहभाग वाढण्याची नितांत गरज आहे.

महिलांचा राजकीय सहभाग कमी असण्याची कारणे :-

1) पुरुषी वर्चस्वाचा प्रभाव :-

भारतामध्ये पुरुषी वर्चस्वाचा प्रभाव दीर्घकालीन राहिलेला आहे. त्यामुळे महिलांना बरोबरीचे स्थान देण्यास ही मानसिकता अनुकूल राहिलेली नाही. समाजात ही मानसिकता अतिशय खोलवर रूजलेली आहे त्यामुळे भारतीय लोकशाहीमध्ये महिलांचा राजकीय सहभाग कमी असलेला दिसून येतो.

2) राजकारणाबद्दल महिलांचा दृष्टिकोण :-

भारतामध्ये राजकारणाबद्दल महिलांचा दृष्टिकोण फार बदललेला दिसून येत नाही. याचे कारण महिला या सत्य, प्रामाणिकता, कर्तव्यदक्ष, वचनबद्ध, न्यायप्रियता सारख्या अनेक मूल्यांवर भर देणाऱ्या असतात. त्यामुळे दिवसागणीक होत असलेले राजकारणाचे गुन्हेगारीकरण पाहता महिलांची राजकारणाप्रती मानसिकता फार सकारात्मक दिसून येत नाही.

3) सामाजिक परंपरांचा प्रभाव :-

महिलांकडे कुटुंबाची जबाबदारी, मुलांना जन्म देणे, त्यांचे संगोपन करणे इत्यादी गोष्टीला महिलांनी प्राथमिकता दिली पाहिजे. राजकीय क्षेत्र हे पुरुषांसाठी आहे. महिलांनी घर व्यवस्थित सांभाळले, मुलांना घडविले तरी पुष्कळ आहे या सामाजिक परंपरांच्या प्रभावामुळे महिलांचा सहभाग कमी आहे.

4) राजकीय पक्षांमध्ये मर्यादित प्रतिनिधीत्व :-

स्त्रियांना राजकीय पक्षांमध्ये प्रतिनिधीत्व कमी आहे. 33 टक्के आरक्षणामुळे हे प्रमाण निश्चितच वाढेल. निवडून येणाऱ्या प्रतिनिधींवर राजकीय पक्षाचा भर असतो. महिलांना राजकीय पक्ष पुरुषांच्या बरोबरीने प्रतिनिधीत्व देत नाही. त्यामुळे महिलांचा राजकीय सहभाग कमी आहे.⁸

5) आत्मविश्वासाची भावना :-

महिलांनी स्वतःमध्ये नेतृत्व क्षमता विकसित केल्यास व आपला आत्मविश्वास प्रखर केल्यास निश्चितच त्यांचा राजकारणात सहभाग वाढेल. परंतु 83.2 टक्के मुलींना कोणीतरी सतत सांगत असतं की, त्या स्त्री म्हणून अनेक गोष्टी करू शकत नाही आणि सुरक्षित नाही. कुटुंब (34.8 टक्के), समाज (62.2 टक्के), शिक्षण पद्धतीद्वारे (10.8 टक्के) मुलींना हे सांगितले जाते की, त्या स्त्री म्हणून अक्षम आणि असुरक्षित आहेत हे प्रमाण लक्षणीय आहे.⁹ आत्मविश्वासाचा संबंध स्व शी आहे. त्यामुळे आत्मविश्वास ही एक मानसिक आणि आध्यात्मिक शक्ती आहे. हा आत्मविश्वास जेवढा प्रगल्भ असेल तेवढाच महिलांचा राजकारणात सहभाग वाढेल.

महिलांचा लोकशाहीमध्ये सहभाग वाढविण्याकरिता उपाययोजना :-

- 1) महिलांना राजकीय पक्षाद्वारा प्रतिनिधीत्व वाढविले पाहिजे. त्यांना पर्याप्त प्रतिनिधीत्व दिले पाहिजे. महिला निवडून येवू शकते अशा सिटांवर त्यांना प्राथमिकता दिली पाहिजे.
- 2) महिलांचा लोकशाहीत सहभाग वाढविण्याकरिता राजकीय शिक्षण प्रशिक्षण वर्ग त्यांचेकरिता आयोजित केले पाहिजे ज्यामुळे महिलांमध्ये आत्मविश्वास वाढेल आणि नेतृत्व कौशल्य विकसित होण्यास मदत होईल.
- 3) स्थानिक महिलांचा राजकीय प्रक्रियेमध्ये सहभाग वाढविण्यावर भर दिला पाहिजे.
- 4) महिलांच्या प्रगतीला बाधा ठरणाऱ्या रूढी, परंपरांपासून महिलांना सुरक्षित केले पाहिजे.
- 5) राजकीय क्षेत्रात सक्रिय महिलांना त्यांच्या यशस्वीतेबद्दल त्यांच्या कार्यकर्तृत्वाचा गौरव आणि सन्मान केला पाहिजे.
- 6) महिला संघटनेच्या माध्यमातून स्त्रियांनी आपला दबावगटांचा उपयोग राजकीय सहभाग वाढविण्यासाठी केला पाहिजे.

- 7) महिलांकडे निरनिराळ्या प्रकारचे चांगले गुण असतात. उदा. महिला भ्रष्टाचार व हिंसाचार करत नाही. महिला व्यवहारी असतात. महिलांना विधिमंडळात आरक्षण मिळाल्यास महिलांच्या वेगळ्या गुणामुळे एकूणच राजकारणात मानवी चेहरा प्राप्त होईल आणि राजकारणाचे स्वरूप व्यापक लोकशाहीवादी बनेल.¹⁰
- 8) इतिहास काळापासून समाजामध्ये स्त्री-पुरुषांची श्रमविभागणी परंपरागत चालू आहे ही परंपरा बदलली पाहिजे. श्रम विभागणीमुळे स्त्रियांना सार्वजनिक जीवनामध्ये कार्य करण्याची संधी प्राप्त होईल.¹¹ आणि भारतीय लोकशाहीमध्ये महिलांचा राजकीय सहभाग वाढेल.
- 9) संविधानाने सर्व नागरिकांना 18 वर्षे पूर्ण झाल्यानंतर मतदानाचा अधिकार दिलेला आहे. यालाच प्रौढ मताधिकार असे म्हणतात. भारताने प्रौढ मतदानावर आधारलेली लोकशाही स्विकारली आहे. तेव्हा आपले प्रतिनिधी निवडण्याचा अधिकार सर्व नागरिकांना दिलेला आहे. प्रत्येक प्रौढ मतदार आपले वेळोवेळीचे हितसंबंध लक्षात घेऊन मतदान करीतील असे गृहीत यामध्ये आहे. प्रत्येक मतदार संघात 50 टक्के महिला राहत असल्यामुळे त्यांचे हितसंबंध हे राजकारणाचा विषय बनतील त्यावेळी महिलांची ओळख निर्माण होईल. अशी ओळख तयार करण्यासाठी महिलांच्या प्रश्नांचे राजकारण तयार करण्याची गरज आहे. सामान्य महिलेला आकर्षण वाटेल असा कार्यक्रम (अजेंडा) ठरवून तो राजकारणामध्ये राबविण्याची शक्यता निर्माण झाल्यास महिला राजकारणाकडे आकर्षित होऊ शकतात.¹²
- 10) महिलांनी राजकारणात येण्याकरिता आवश्यक असलेले नेतृत्व गुण, ज्यामध्ये निर्णयक्षमता, आत्मविश्वास, ठामपणा, करारी वर्तणूक, निर्भयता या गुणांचा विकास साधण्याची महिलांची संख्या वाढल्यास निश्चितच महिलांचा भारताच्या लोकशाहीमध्ये सहभाग वाढेल.

निष्कर्ष :-

महिलांनी आपल्या कार्यकर्तृत्वाचा ठसा विविध क्षेत्रात उमटविला असला तरी पुरुषांच्या प्रमाणात ही संख्या अत्यल्प आहे. गेल्या 75 वर्षांच्या कालावधीमध्ये केंद्राचे उदाहरण घेतल्यास केवळ एक वेळा महिला पंतप्रधान म्हणून श्रीमती इंदिरा गांधी यांनी तर पहिल्या महिला राष्ट्रपती म्हणून श्रीमती प्रतिभाताई पाटील यांनी भूमिका पार पाडली आहे. यामध्ये सध्याच्या महिला राष्ट्रपती श्रीमती द्रौपदी मुर्मू यांचा उल्लेख दुसऱ्या महिला राष्ट्रपती म्हणून कार्य करित असल्या तरी गेल्या 75 वर्षांच्या कालावधीत एकदाही सर्वोच्च न्यायालयाच्या सरन्यायाधिशपदी महिला विराजमान झालेल्या दिसत नाही. केंद्र अथवा घटक राज्यस्तरावरील मंत्रीमंडळामध्ये देखील महिलांची संख्या नगण्य आहे. सचिव स्तरावरसुद्धा महिलांची संख्या अत्यल्प आहे. विविध घटक राज्यांमध्ये महिलांनी मुख्यमंत्री पदावर, राज्यपाल पदावर भूमिका पार पाडली व आताही पार पाडत असल्या तरी पुरोगामी म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या महाराष्ट्रामध्ये गेल्या 61 वर्षांच्या कालावधीमध्ये आजही महिला मुख्यमंत्री झालेल्या नाही ही बाब खरोखर विचारात घेण्याजोगी आहे.

संदर्भसूची :-

- 1) डॉ. आंबेडकर बाबासाहेब (शिल्पकार), 'भारताचे संविधान', समता प्रकाशन, नागपूर, 2010, पृ.क्र.225
- 2) उपरोक्त
- 3) उपरोक्त
- 4) उपरोक्त, पृ.क्र. 229
- 5) उपरोक्त, पृ.क्र.377
- 6) प्रतियोगिता दर्पण, ऑगस्ट 2023, पृ.क्र.102
- 7) दैनिक लोकमत, 7 मार्च 2023, पृ.क्र.4
- 8) प्रतियोगिता दर्पण, ऑगस्ट 2023, पृ.क्र.102



Principal Dr. Avinash Moharil

M. A., (English), Gold Medalist,
SET, Ph.D., PG Diploma & Master in Psychotherapy
Mahila Mahavidyalaya, Amravati

- Serving in Higher Education Field from 1996
- Professor in English and English Literature to UG & PG
- Principal of Mahila Mahavidyalaya, Amravati from 2012
- Served as Dean, Humanities in SGBAU from 2019-22
- Working as Vice-President of Vidarbha Sahitya Sangh
- Execu.Member, Deepshikha Military School Chikhaldara
- Writing regularly in News Papers/Periodicals since 2000
- Published book 'थोडा है थोडेकी जरुरत है' in 2017
- Books " सहजच" & "फोटो thought" on Amazon kindle
- Member, Steering Committee, Gadge Baba Blood Bank
- Published more than 50 Research Papers
- Participated in many National/International Conferences
- Study tour of Sweden, Denmark, Norway in 2009
- Lectures on various topics in India & abroad since 2000
- Interest in Music, Photography, Reading and Travel
- Started Hope Counselling Center for all age groups
- Effective Counsellor with speciality in Stress Management
- NAAC assessor, Promoter: National Education Policy
- "Best Principal Award" of Dept. Of Hr. education in 2021.



Dr. Pravin Jaykrushna Gulhane

M.A, M.Phil, NET, Ph.D (Political Science)

MA (Marathi), B.Ed.

Asst. Professor, Dept. of Political Science

Mahila Mahavidyalaya, Amravati

- Working as HOD of Political Science Department in Mahila Mahavidyalaya , Amravati from 2011-2012.
- 08 years Teaching experience at UG and PG level in Government Vidarbha Institute of Science and Humanities, Amravati & 11 years Teaching experience at YCMOU, Nashik .
- Published more than 40 research papers in various Conferences, Seminars & Journals.
- Registered as a Ph.D. supervisor in Sant Gadge baba Amravati University, Amravati.
- Working in Board of Directors in Indian Research Education Foundation, Wardha.
- Article writing in various newspapers.
- Published collection of Marathi Poems namely 'पापणीत माझ्या'.
- Registered Soft Skill Trainer in Santa Gadge Baba Amravati University, Amravati.
- Worked as NSS Program officer for 03 years at Mahila Mahavidyalaya, Amravati.



Aadhar Publications
(National Publishers)

New Hanuman Nagar, Infront of Pathyapustak Mandal, VMV Road, Amravati - 444604.
Email - aadharpublication@gmail.com. M.: 9595560278

ISBN : 978-93-95494-85-4





Bharatiya Seva Sadan's

Smt. Radhadevi Goenka College For Women, Akola

(Certified Minority Institution) (Affiliated to Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati)

NAAC Accredited "A" Grade with CGPA 3.07 in III Cycle



CERTIFICATE

One Day International Multidisciplinary Conference

EGO ♀ FEMINISM

Organized by

Departments of Languages

This is to certify that Dr. / Mr. / Mrs. / Ms. **Dr. Pallavi S. Ambhore**

has participated and presented the paper entitled **Feminine Sensibility in the works of Namita Gokhale**

in One Day International Multidisciplinary Conference on **"EGO ♀ FEMINISM"** held on 4th November, 2023, organized by Departments of Languages, Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola, Maharashtra, India.

Dilipraj Goenka

Mr. Dilipraj Goenka

President

Bharatiya Seva Sadan

Dr. U. P. Patil

Dr. U. P. Patil

Dept. of English

Convener

Dr. Swapnil Ingole

Dr. Swapnil Ingole

Dept. of Marathi

Convener

Dr. Charushila Rummale

Dr. Charushila Rummale

Principal

Smt. RDD College for Women, Akola

Empowerment of Women through Economic Independence for the Betterment of Society.

Impact Factor-8.632 (SJIF)

ISSN-2278-9308

ISSUE No
(CDXXXVI) 436

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

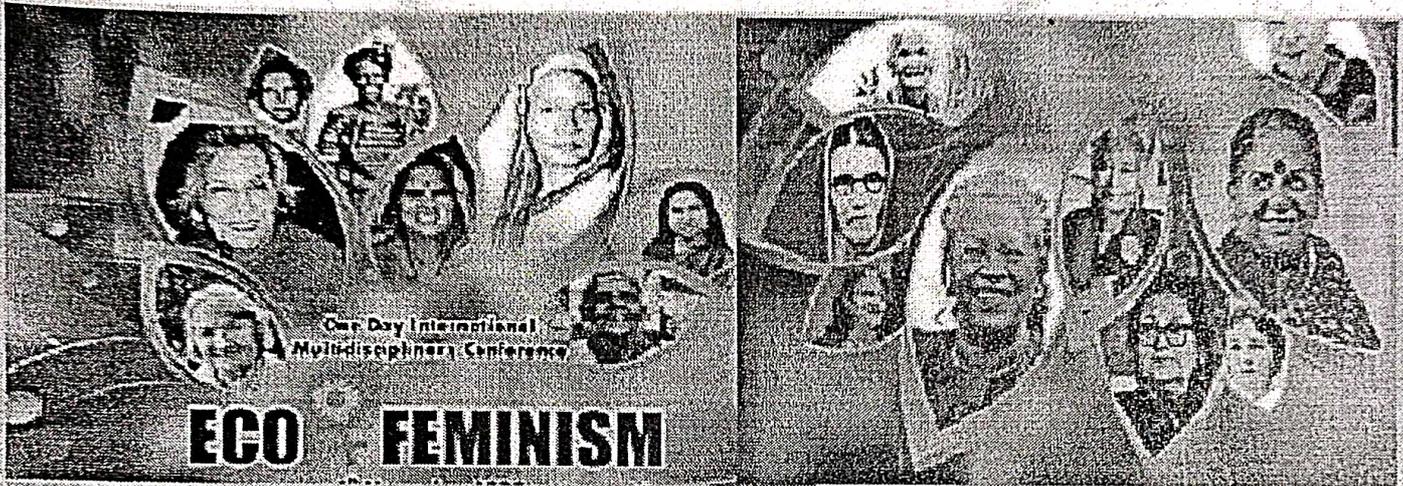
Multidisciplinary International Research Journal

One Day International Multidisciplinary Conference On

ECO FEMINISM

Conference Proceedings

November - 2023



Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande

Director

Aadhar Social

Research & Development
Training Institute Amravati

Editor

Dr. Umesh Patil

Dept. of English

Smt. Radhadevi Goenka
College for Women, Akola (M.S.)

Executive Editor

Dr. Charushila Rumale

Principal

Smt. Radhadevi Goenka
College for Women, Akola (M.S.)

Editor

Dr. Swapnil Ingole

Dept. of Marathi

Smt. Radhadevi Goenka
College for Women, Akola (M.S.)



This journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadhar-social.com

Aadhar PUBLICATIONS

Impact Factor – (SJIF) –8.632

ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

November – 2023

ISSUE No - (CDXXXVI) 436

One Day International Multidisciplinary Conference On

ECO FEMINISM

Conference Proceedings

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor

Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr.Charushila Rumale

Executive-Editor

Principal,

Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola (M.S.)

Editors

Dr.Umesh Patil

Dept. of English

Radhadevi Goenka

College for Women, Akola (M.S.)

Dr. Swapnil Ingole

Dept. of Marathi

Smt. Radhadevi Goenka

College for Women, Akola (M.S.)

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

**INDEX**

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	Patriarchal Dominance In The Novel Mathilda By Mary Shelley - A Feministic Approach	Renu P. Katkar	1
2	Impact of Folk and Mythic Culture on Indian women in Naga Mandala by Girish Karnad	D. M. Gaikwad	3
3	Tribal Women Literature In India	Sanjay Jagdeo Shinde	6
4	Feminine Sensibility in the select novels of Margaret Atwood	Mr. Jayesh Arjun Gajare , Dr. Ashalata M.V.P. Raman	9
5	Challenges and Opportunities Faced by Women Librarians in Pune	Dr. Dhananjay Trimukhe	25
6	Feminine Sensibility in the works of Namita Gokhale	Dr. Pallavi S. Ambhore	28
7	The Multifaceted Role Of Women In The Social Environment	Dr. Devidas Shriram Bhagat	30
8	Women Empowerment And Its Advantage To Society	Prof. Avinash Ramkrishna Pawar	34
9	Depiction of Indian Women and Culture in Indian Writing in English.	Dr Nitin Deshmukh	37
10	Girish Karnad's Film Cheluvi: A Study in Eco-feminism	Ms. Dimple D. Mapari	40
11	A Feminist Study of Doris Lessing's Novel The Summer Before the Dark	Dr. B.W. Somatkar	44
12	Misogynist Dystopias, A Platform To Vent Women Anger And Anxieties	Mr. Rahul R. Gawande , Dr. Ashalata M.V.P Raman	47
13	Exploitation of Women & Environment	Dr. Sangita M. Khadse	50
14	The Contribution of Women Entrepreneurs to Sustainable Entrepreneurship	Dr. Rita Deshmukh	52
15	Ecofeminism in Kamala Markandaya's <i>Nector in a Sieve</i>	Dr. Pranjali Bhanudas Vidyasagar	56
16	Role Of Women In Environmental Protection	Prof. Santosh Maruti Shinde	60
17	Contribution Of Indian Women Writers To Literature	Dr. Rupesh S. Wankhade	66
18	Role of Women in Environment Protection	Dr. Vinod B. Chavhan	71
19	Portrayal of Indian women and culture in Perumal Murugan's Novels.	Aakash P. Haral	75
20	Feminine Sensibility in Literature	Dr. Waman G. Jawanjhal	78
21	Mahashweta Devi's "Breast Giver" : A Feminist Discourse Shweta A. Khetan	Dr. Avinash Moharil	81
22	Women Empowerment with Regard to Human Resource Management	Dr. Vasudev Nandkishor Joshi	85



Feminine Sensibility in the works of Namita Gokhale

Dr. Pallavi S. Ambhore

Associate Professor Mahila Mahavidyalaya, Amravati.

Abstract:

In Indian English literature, the first thing that strikes us is the broadening of the thematic range of Indian English novels. In post modernism writers have moved from the village centrism to the city centrism. Love, sex, and marriage and the failure of marriages are some of the leading themes in Indian English novels. Description of love, sex is very bold and unconventional in post modernism. The theory of feminism is mostly depicted in such novels.

Key words: Feminism, modern world, protagonist, Namita Gokhale

Introduction:

Indian writing feminism has been used as a modest attempt for evaluating the real social scenario as far as women are concerned. We can also witness the glimpse of feminism in the works of Namita Gokhale who is an Indian writer, editor, festival director and publisher. She is the author of twenty one books including eleven work of fiction and editor of numerous anthologies. She is popular both for her writing and her commitment to multilingual Indian Literature. Most of his works address the issues of feminism and the reactions of casteism in her novels.

Presentation of feminism in the novels of Namita Gokhale:

1. Paro- Dream of Passion

Namita Gokhale got fame with the release of her debut novel Paro- Dream of Passion. She frankly presented human desires and needs in an unexpected manner in this novel. She pioneered a sexually frank genre of writing. Her novels focus on obsession with love, lust and death also on personal struggle and problems of women, their rightful place for themselves in the society. Her fiction constitutes a major segment of contemporary writing in English which captures the complex subtleties of human relationships. The work of Namita Gokhale is a reflection of the souls anguished by the rootlessness and meaninglessness of life. She focuses the central preoccupations of the present era in her individual style and communicates her unique vision of reality.

Paro is a bold woman who celebrates her sexuality and uses it to disseminate the world of men. Paro is an ambitious woman who does not believe in adjustment and blames others for shattering her dreams. There is another character, named Priya, who is also the narrator of the story. The plot moves around the upper middle class society of Bombay and Delhi with physically number of incidents which show complexities of relationships among characters. In this novel life is presented as a journey larger than death.

Gokhale's fiction constitutes a major segment of contemporary writing in English and captures the complex subtleties of human relationships in texture of her simple idiom.

2. 'Gods, Graves and Grandmother'

The novel 'Gods, Graves and Grandmother' is a story of a girl who caught in the web of suffering, frustration and boredom which are characteristic of an Indian house wife. Protagonist of the novel is Gudiya whose life has become nothing but a tale of anguish and despair surrounded by people who do not honor her inner feelings. In the novel Gudiya is deserted by her parents because her widowed mother elopes with a man of her choice. As time passes, grandmother started neglecting her feelings. However, she resolves to lift herself from the impoverished situation and endeavor towards happiness with determination and courage. Phoolwali is another important female character in the novel who inspires Gudiya to lead her life independent. In this novel author portrayed the different dimensions of relationships, suppression and victimization.

3. A Himalayan Love Story

A Himalayan love story is Gokhale's third novel in which she depicted the course of survival of ordinary people who refuse to be repressed by their suffocating surrounding. The protagonist of the novel is Parvati who is neglected daughter of a poor widow. Parvati ought to marry with Lalit. To parvati's utmost utter misfortune, Lalit turned out to be homosexual who was unfriendly toward her. Parvati challenges the established rules of right and wrong behavior. In this way complexities of



human relationships and changes going on in the society are presented very skillfully by the author in this novel.

Gokhale's fourth novel, 'The Book of Shadow' picturises the Kumaon climate and its beauty. The novel is partly a ghost story, partly a romance, partly erotic and partly a story of woman's struggle for self- definition. Ruchita Tiwari is the protagonist of the novel. In the novel she falls in love with a insecure man, Anand. Anand's sister took revenge by throwing acid on Ruchita's face. In this novel, the author deals with the problems of inharmonious man-woman relationship and the dreadful psychic longings of disturbed women.

It is a resurrection of a female who wants to take a free flight away from her caged existence. Author presented the everlasting struggle of a woman since childhood through the character of Shakuntala. The novel shows her daring nature. Fluctuating between two states of mind, she begins her spiritual journey to find herself. boldly, she breaks free from all the unwanted clutches and undertake a journey to assert her own identity.

4. The Blind Matriarch

The Blind Matriarch is Namita's twentieth novel. It is a story of love and loss, triumph of human spirit. This book is a real- time narratives of India's encounter with the Coronavirus. In this book, protagonist Matangi-Ma holds together her joint family. Author documents the enormous complexities of human relationships in the middle class India with elegance and humor. She took every emotion that has immersed. Author has presented Matangi Ma's joint family that is being crushed by the uncertainties of the pandemic.

Conclusion:

Apart from Indianness in the works of Namita Gokhale, we also find historical aspects. The names of the protagonists, like Paro and Parvati are historical names. She also represents a women's quest for liberation which not something new or unique to India. She has courage to express women's feminine sensibility honestly and sincerely. Namita's real concern is conflict in relationship in the modern world and exploration of human psyche and how male and female psyche works. She explores the clash between traditional codes and modern aspirations. Through her novels she has given voice to the sufferings of women. In this way Namita Gokhale has presented scores of aspects of complexities of human relationships through her novels.

References :

1. Gokhale Namita. Paro: Dreams of Passion. Penguin Books, 2011.
2. Gokhale, Namita. Shakantula: The play of memory. Penguin Books. 2013
3. Gokhale, Namita. The Blind Matriarch. India Penguin. 2022.
4. Banerjee, Swapan K. Interview with Namita Gokhale. The Statesman. 4th March 2001.

E-REFERENCES :

1. <https://en.m.wikipedia.org>
2. <https://www.uok.ac.in>
3. <https://www.ukessay.com>

समग्र सर्वस्पर्शी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर



संपादक

डॉ. ओमप्रकाश सा. बोबडे

समग्र सर्वस्पर्शी : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

- ◆ संपादक : डॉ. ओमप्रकाश बोंबडे
०२, स्नेह रेसिडेन्सी, मनोर मांगल्य मागे,
जुना बायपास, अमरावती, महाराष्ट्र
मो. ९८६०८८२४५६
Email : omprakashbobade@gmail.com
- ◆ प्रकाशक : प्राचार्य,
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर महाविद्यालय,
अमरावती
- ◆ आवृत्ती : प्रथम
- ◆ प्रकाशन तारीख : ६-१२-२०२३
- ◆ ISBN : 978-81-948833-2-6
- ◆ © : सर्व हक्क संपादकाच्या अधीन
- ◆ अक्षर जुळवणी : श्री गजानन ढोले
- ◆ मुखपृष्ठ : श्री मनिष चोपडे
- ◆ मुद्रक : अथर्व ग्रॉफिक्स, अमरावती
- ◆ किंमत : रु. २००

सर्व हक्क सुरक्षित, या पुस्तकातील मजकुरातून / चित्रातून व्यक्त झालेल्या विचारांशी / प्रकाशक / मुद्रक सहमत असेलच असे नाही. कुठलाही वाद अमरावती न्याय क्षेत्रांतर्गत राहिल.

अनुक्रमणिका

अ.क्र	तपशील	नं.
१)	कामगारांचे कैवारी : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर डॉ. राजू भा. खरडे	१
२)	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार प्रा. डॉ. महेश गोमासे	६
३)	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : सामाजिक विचार व कामगिरी प्रा. डॉ. विजया साखरे	१०
४)	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचा शैक्षणिक दृष्टिकोन डॉ. जगदीश द. हेंडवे	२१
५)	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक विचार व आजची शिक्षण व्यवस्था डॉ. सुभाष रा. रगडे	२८
६)	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार प्रा. वडितके शंकर गोरक्ष	३९
७)	लोकशाहीचा पाया म्हणजेच डॉ. आंबेडकरांचे संविधान प्रा. डॉ. रवींद्र पुंडलिक झनके	४२
८)	बॅरिस्टर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचा राज्य समाजवाद प्रा. डॉ. गोवर्धन कृष्णाहरी दिकोंडा	४८
९)	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि सत्याग्रह प्रा. डॉ. सौ. रूपाली गोवर्धन दिकोंडा	५३
१०)	बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक विचार डॉ. कविता एन. मालोकार (हिरूळकर)	५९
११)	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे धार्मिक विचार अ. बी. वरघट	६७
१२)	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार प्रा. डॉ. मंजुषा ह. धापुडकर	७५

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार

प्रा. डॉ. मंजुषा ह. धापुडकर
इतिहास विभाग प्रमुख,
महिला महाविद्यालय जोग चौक, अमरावती.

प्रस्तावना :

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या मते समाज परिवर्तनाचे प्रभावी शस्त्र म्हणजे शिक्षण होय. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी शैक्षणिक विचारांचे सार शिका, संघटित व्हा आणि संघर्ष करा या तीन तत्त्वात मांडले आहे. प्रत्येक व्यक्तीचा सर्वांगीण विकास शिक्षणामुळेच घडतो. शिक्षण हे सामाजिक क्रांतीचे प्रभावी साधन आहे. शिक्षणामुळेच माणूस घडतो व्यक्तिमत्व निर्माण करण्यासाठी शिक्षणाचीच गरज असते. समाजामध्ये जागृती निर्माण करण्याकरिता व मूल्यांची जपवणूक करण्याकरिता जो समाज निर्माण होतो तो शिक्षणामुळेच होतो. शिक्षणामुळेच लोकशाही बळकट होते. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर शिक्षणासंबंधी बहुविध विचार व्यक्त करणारे शिक्षण तज्ज्ञ होते. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी ग्रंथ निर्माण करून भारतात तसेच विदेशातही प्रचंड वादळ उठविले. आधुनिक भारताच्या संदर्भात सामाजिक क्रांतीचा विचार मांडून त्या दिशेने कृती करणारे राजकीय नेते आणि तत्त्वज्ञ म्हणून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्थान निर्विवाद आहे. बाबासाहेब आंबेडकरांनी आयुष्यभर खडतर ज्ञानसाधना करून विधिशास्त्र, समाजशास्त्र, राज्यशास्त्र, अर्थशास्त्र या विषयांमध्ये प्रभुत्व संपादन केले. दलित, शोषित आणि पीडित समाजाच्या सर्वांगीण विकासासाठी त्यांनी आपले आयुष्य समर्पित केले. ते पत्रकार, शिक्षणतज्ञ प्रज्ञासूर्य, विश्वभूषण होते. त्यांनी 'लोकशिक्षक' या नात्याने

अनेक शैक्षणिक कार्य करून आपले शिक्षण विषयक विचार मांडले.

प्राथमिक शिक्षणाविषयी विचार :

प्राथमिक शिक्षणाच्या बाबतीत कायद्याने सक्ती करणे अत्यंत गरजेचे आहे, तर जे व्यक्तिसमूह बौद्धिकदृष्ट्या उच्च शिक्षणाचा महत्तम लाभ घेण्यास असमर्थ आहेत. पण, आर्थिक स्थिती योग्य नाही म्हणून किंवा अनेक अडचणी आहेत म्हणून, असे वर्ग या शिक्षणाच्या लाभापासून वंचित आहेत. त्यांना उच्च शिक्षणाच्या सुविधा पुरवण्यासाठी विद्यापीठ ही प्राथमिक स्वरूपाची यंत्रणा आहे, असे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांना वाटत. केवळ लिहिण्या-वाचण्याचे ज्ञान पुरेसे ठरणार नाही, तर शिक्षणाच्या उच्च टोकापर्यंत पोहोचले पाहिजे, म्हणजे त्यांच्याबरोबर वाटचाल करून संपूर्ण समाजाचा दर्जा उंचावेल. मिलिंद महाविद्यालयाच्या शिलान्यास प्रसंगी बोलताना बाबासाहेब म्हणतात, 'हिंदू समाजाच्या अगदी खालच्या थरातून आल्यामुळे शिक्षणाचे महत्त्व किती आहे, हे मी जाणतो. खालच्या समाजाची उन्नती करण्याचा प्रश्न आर्थिक असल्याचे मानण्यात येते, पण ही चूक आहे. कारण, हिंदुस्थानातील दलित समाजाची उन्नती करणे म्हणजे त्यांच्या अन्न, वस्त्र, निवारा यांची सोय करून पूर्वीप्रमाणे त्यांना उच्च वर्गाची सेवा करण्यास भाग पाडणे नव्हे. खालच्या वर्गाची प्रगती मारून त्यांना दुसऱ्यांचे गुलाम व्हावे लागत असल्यामुळे त्यांच्यात निर्माण होणारा न्यूनगंड नाहीसा करणे, हे खरे शिक्षणाचे ध्येय आहे.'

उच्च शिक्षणाविषयी विचार :

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या मते जे व्यक्ती समूह बौद्धिक दृष्ट्या उच्च शिक्षणाचा महत्तम लाभ घेण्यास समर्थ आहेत. पण आर्थिक स्थिती योग्य नाही व ते शिक्षणाच्या लाभापासून वंचित आहेत. त्यांना उच्च शिक्षणाच्या सुविधा पुरवण्यासाठी विद्यापीठ ही प्राथमिक स्वरूपाची यंत्रणा होय. केवळ लिहिण्या वाचण्याने ज्ञान पुरेसे ठरणार नाही, तर शिक्षणाच्या उच्च टोकापर्यंत पोहोचले पाहिजे म्हणजे त्यांच्याबरोबर वाटचाल करून संपूर्ण समाजाचा दर्जा उंचावेल. मिलिंद महाविद्यालयाच्या शिलान्यास प्रकरणी बोलताना बाबासाहेब म्हणतात हिंदू समाजाच्या अगदी खालच्या थरातून आल्यामुळे शिक्षणाचे महत्त्व किती आहे हे मी जाणतो. खालच्या समाजाची उन्नती करण्याचा प्रश्न आर्थिक असल्याचे मानण्यात येते, पण हे चूक आहे कारण हिंदुस्थानातील दलित समाजाची उन्नती करणे म्हणजे त्यांच्या अन्न, वस्त्र, निवाऱ्याची सोय करून पूर्वीप्रमाणे त्यांना उच्च वर्गाची सेवा करण्यास भाग पाडणे नव्हे, खालच्या वर्गाची प्रगती मारून त्यांना दुसऱ्यांचे गुलाम व्हावे लागत असल्यामुळे त्यांच्यात निर्माण होणारा न्यूनगंड

नाहीसा करणे, हे खरे शिक्षणाचे ध्येय आहे. आमच्या सर्व सामाजिक दुखण्यावर उच्च शिक्षण हेच एकमेव औषध आहे.

विज्ञान आणि तंत्रज्ञान शिक्षणाविषयी विचार :

विज्ञान आणि तंत्रज्ञान शाखातील उच्च शिक्षण म्हणजे उपयोगी शिक्षण होय, परंतु हेही वास्तव आहे की, अनुसूचित जातीतील बहुतांश लोक त्यांची स्थिती, त्यांच्याजवळ उपलब्ध संसाधने त्यांची कार्यक्षमता यांचा विचार करता विज्ञान आणि तंत्रज्ञान शाखातील उच्च शिक्षण यांना खुले होणार नाही आणि याच कारणास्तव केंद्रीय सरकारने या शाखेतील उच्च शिक्षणाकरिता अर्थसहाय्यासाठी पुढे येणे न्याय, योग्य आणि आवश्यक आहे. हिंदुस्तान सरकारने अनुसूचित जातीतील विद्यार्थी विज्ञान आणि तंत्रज्ञान शाखातील उच्च शिक्षण घेत असतील तर त्यांना शिक्षणाकरिता शिष्यवृत्ती रूपाने वार्षिक अनुदान द्यावे. अनुसूचित जातीतील विद्यार्थी इंग्लंड, युरोप आणि अमेरिका येथील विद्यापीठातून विज्ञान आणि तंत्रज्ञान शाखातील उच्च शिक्षणासाठी हिंदुस्तान सरकारने अनुदान द्यावे.

स्त्री शिक्षणाचा पुरस्कार :

एक स्त्री शिकली तर संपूर्ण कुटुंब शिक्षित होते आणि स्त्रियांच्या प्रगती वरच समाजाची प्रगती अवलंबून आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्त्री मुक्ती विषय कार्य हे केवळ उपेक्षित, वंचित घटकातील स्त्रियां पुरतेच मर्यादित नव्हते तर देशातील सर्व स्त्री वर्गाच्या उद्दाराचे कार्यव्रत त्यांनी घेतले होते. जाती वर्ग विरहित स्त्री वर्गाचा सर्वांगीण विकास व्हावा यासाठी त्यांनी वेळोवेळी आपल्या लिखाणातून, भाषणातून व चळवळीतून विचार मांडलेले आहेत. एकूणच भारतीय समाजाच्या सर्वांगीण विकासासाठी आपले संपूर्ण आयुष्य खर्ची घालणारे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आपल्या आयुष्यात विद्यार्थी दशेपासूनच स्त्री स्वातंत्र्याचे पुरस्कर्ते होते. डॉ. बाबासाहेबांनी शिक्षणाला कायद्याचे स्वरूप प्राप्त करून देऊन स्त्री शिक्षणाचा पुरस्कार केल्याचे दिसून येते. एवढेच नाही तर मुर्लीना शिकविण्यासाठी विद्यालय, शाळा वसतीगृह सुद्धा सुरू केले, तसेच ते शिक्षणाला वाघिणीचे दूध मानत असे.

विद्यापीठ शिक्षणाचे महत्त्व:

विद्यापीठात दिले जाणारे शिक्षण समाजाभिमुख असावे, ते शिक्षण विज्ञाननिष्ठ आणि भेदभाव विरहित असावे. कोणत्याही विशिष्ट समाज घटकांच्या हितसापेक्ष नसावे. शिक्षणाचा उद्देश वस्तुस्थितीपूरक माहिती पुरविणे किंवा काही सिद्धांत शिकविणे हा नसावा. तर विद्यार्थ्यांचे व्यक्तिमत्व विकसित होईल, त्यांच्या मानसिक व बौद्धिक क्षमतेची

वाढ होऊन प्रस्थापित विद्वत जनांच्या विचारांचे टीकात्मक परीक्षण करण्यास तो समर्थ झाला पाहिजे. प्रथम सूत्राचा शोध घेऊन ती आवश्यक माहिती मिळविण्याचा प्रयत्न करतील. त्यांच्या मनात कोणत्याही विषयासंबंधी जिज्ञासा निर्माण होऊन त्याद्वारे मागेल अद्यापनाच्या प्रवृत्ती विकसित होतील. त्याचप्रमाणे सत्याचा शोध किती अवघड आहे याची त्यांना जाणीव होईल. तरीही त्या मार्गावर जाणे किती आवश्यक आहे हे त्यांना जाणवेल. एखाद्याने व्यक्त केलेले मत आणि वस्तुस्थिती यामधील अंतर ते जाणू शकतील. समस्या जाणून घेऊन प्रत्येक समस्येचे निदान करताना आपल्या आवडत्या सिद्धांताचा मोह त्यांनी टाळावा. एखाद्याच्या मताचा तीव्र विरोध जरी करावयाचा असेल तरीही त्या व्यक्तीवर अन्याय होणार नाही याची काळजी घ्यावी. विचारांची संकल्पनाची सत्य पडताळून पाहण्याची दृष्टी त्यांना द्यावी. या विश्लेषणातून काय निष्कर्ष निघतो याचा त्यांनी विचार करावा. एखाद्या विचाराचा किंवा संकल्पनेचा स्वीकार व अविष्कार करण्यापूर्वी त्याबद्दल विवेकनिष्ठ विचार करावा. मौलिक स्वरूपाचे शोध कार्य करण्यापेक्षा मौलिक संशोधन कशा प्रकारे केले जाते हे अधिक महत्त्वाचे आहे याची जाणीव त्यांना व्हावी. उपलब्ध पुराव्याचे योग्य मूल्यमापन करावे, तर्काचा पाठपुरावा करावा, त्यावर टीका करावी, तसेच प्रस्थापित विद्वत जणांच्या मतावर भाष्य करावे. या सर्व क्षमता विद्यार्थ्यांमध्ये विकसित करणे हे विद्यापीठ शिक्षणाचे ध्येय असावे. हे डॉ. आंबेडकरांचे मत होते यादृष्टीने विद्यापीठ शिक्षणातून विद्यार्थी घडावा असे डॉ. बाबासाहेबांना अपेक्षित होते.

निष्कर्ष -

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी स्वातंत्र्यपूर्व व स्वातंत्र्योत्तर काळात प्राथमिक, उच्च व विद्यापीठ शिक्षणावर तसेच स्त्री शिक्षणावर जे विचार व्यक्त केले त्या विचारांची प्रसंगीकता आजही आढळते. प्राथमिक शिक्षण सक्तीचे करावे, हे मुंबई विधिमंडळापुढे १९२७ साली मांडलेले विचार त्याकाळी लोकांना पचनी पडले नाही. परंतु केंद्र शासनाने अलीकडे प्राथमिक शिक्षण हा मूलभूत अधिकार असल्याचे तत्व स्वीकारून शिक्षणाचा अधिकार हा कायदा पारीत करून त्याची अमलबजावणी केली. यावरून डॉक्टर बाबासाहेब आंबेडकरांच्या शैक्षणिक विचारांची प्रसंगी कथा निदर्शनास येते.

उच्च व विद्यापीठीय शिक्षणाबाबत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी व्यक्त केलेली विचार हे महाराष्ट्र विद्यापीठ अधिनियम १९९४ मध्ये विद्यापीठाच्या उद्दिष्टांमध्ये समाविष्ट करण्यात आले आहे. भारतीय संविधानात अधिष्ठित समता, स्वातंत्र्य, बंधुता, न्याय, धर्मनिरपेक्षता लोकशाही ही मूल्ये विद्यार्थ्यांना शिक्षणाच्या माध्यमातून देणे हे महत्त्वाचे

उद्दिष्ट विद्यापीठ कायद्यात अंतर्भूत करण्यात आली आहेत. घरातील स्त्री शिकली तर संपूर्ण कुटुंब सुशिक्षित होते हा त्यांचा त्यावेळीचा दृष्टिकोन आजही १००% लागू पडतो. त्यांनी शिक्षणाबद्दल व्यक्त केलेले विचार व तत्त्वज्ञान त्याला कृतीची असलेली जोड विचारात घेता डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे केवळ अर्थतज्ञ व कायदे तज्ञ नसून तर ते एक महान शिक्षणतज्ञ होते याची नोंद भारतीय इतिहासाने घेतलेली आहे.

संदर्भसूची

- १) कीर, धनंजय डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई आवृत्ती २००६
- २) डाहाट डॉ. धनराज, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर भाषणे व विचार खंड २ शिक्षण संकेत प्रकाशन नागपूर आवृत्ती २०१२
- ३) गाठाळ डॉ. एस. एस. आंबेडकरी चळवळीचा इतिहास, कैलास पब्लिकेशन औरंगाबाद आवृत्ती २०१० ४) ४) घोडेस्वार, देविदास दलितांचे शिक्षण समता प्रकाशन, नागपूर आवृत्ती १९९४
- ५) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर गौरवग्रंथ, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई, आवृत्ती १९९३.
- ६) खैरमोडे, चां.भ. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जीवन चरीत्र खंड १
- ७) mahamt.com

